

श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

सुवर्णमाला स्तुति



अथ कथमपि मद्रसनां त्वद्गुण-
लेशैर्विशो धयामि विभो ।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ १ ॥

आखण्डलमदखण्डनपण्डित
तण्डुप्रिय चण्डीश विभो ।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरण युगम् ॥ २ ॥

इभचर्माम्बर शम्बररिपुवपु-
रपहरणोज्ज्वलनयन विभो ।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ३ ॥

ईश गिरीश नरेश परेश
महेश बिलेशयभूषण भो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ४ ॥

उमया दिव्यसुमङ्गलविग्रह-
यालिङ्गितवामाङ्ग विभो ।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ५ ॥

ऊरीकुरु मामज्ञमनाथं
दूरीकुरु मे दुरितं भो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ६ ॥

ऋषिवरमानसहंस चराचर-
जननस्थितिलयकारण भो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ७ ॥

ऋक्षाधीशकिरीट महोक्षा-
रूढ विधृतरुद्राक्ष विभो ।

साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ८ ॥

लवर्णद्वन्द्वमवृन्तसुकुसुममि-
वाङ्घ्रौ तवार्पयामि विभो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ९ ॥

एकं सदिति श्रुत्या त्वमेव
सदसीत्युपास्महे मृड भो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ १० ॥

ऐक्यं निजभक्तेभ्यो वितरसि
विश्वंभरोऽत्र साक्षी भो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ११ ॥

ओमिति तव निर्देष्टी माया-
स्माकं मृडोपकर्त्री भो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ १२ ॥

औदास्यं स्फुटयति विषयेषु
दिगम्बरता च तवैव विभो ।।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ १३ ॥

अन्तःकरणविशुद्धिं भक्तिं
च त्वयि सतीं प्रदेहि विभो ।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ १४ ॥

अस्तोपाधिसमस्तव्यस्तै
रूपैर्जगन्मयोऽसि विभो ।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ १५ ॥

करुणावरुणालय मयि दास
उदासस्तवोचितो न हि भो ।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ १६ ॥

खलसहवासं विघटय घदय
सतामेव सङ्गमनिशं भो ।

साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ १७ ॥

गरलं जगदुपकृतये गिलितं
भवता समोऽस्ति कोऽत्र विभो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ १८ ॥

घनसारगौरगात्र प्रचुरज-
टाजूटबद्धगङ्ग विभो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ १९ ॥

ज्ञप्तिः सर्वशरीरेष्वखण्डि-
ता या विभाति सा त्वं भो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ २० ॥

चपलं मम हृदयकपिं विषय-
द्रुचरं दृढं वधान विभो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ २१ ॥

छाया स्थाणोरपि तव तापं
नमतां हरत्यहो शिव भो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ २२ ॥

जय कैलासनिवास प्रमथग-
णाधीश भूसुरार्चित भो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ २३ ॥

झणुतकझङ्किणुझणुतत्किटतक-
शब्दैर्नटसि महानट भो ।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ २४ ॥

ज्ञानं विक्षेपावृतिरहितं
कुरु मे गुरुस्त्वमेव विभो ।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ २५ ॥

टङ्कारस्तव धनुषो दलयति
हृदयं द्विषामशनिरिव भो।

साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ २६ ॥

ठाकृतिरिव तव माया बहिर-
न्तः शून्यरूपिणी खलु भो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ २७ ॥

डम्बरमम्बुरुहामपि दलय-
त्यनघं त्वदङ्घ्रियुगलं भो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ २८ ॥

ढक्काक्षसूत्रशूलद्रुहिणक-
रोटीसमुल्लसत्कर भो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ २९ ॥

णाकारगर्भिणी चेच्छुभदा
ते शरगतिनृणामिह भो
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ३० ॥

तव मन्वतिसंजपतः सद्य-
स्तरति नरो हि भवाब्धिं भो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ३१ ॥

थूत्कारस्तस्य मुखे
भूयात्ते नाम नास्ति यस्य विभो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ३२ ॥

दयनीयश्च दयालुः कोऽस्ति
मदन्यस्त्वदन्य इह वद भो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ३३ ॥

धर्मस्थापनदक्ष त्र्यक्ष
गुरो दक्षयज्ञशिक्षक भो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ३४ ॥

ननु ताडितोऽसि धनुषा लुब्धधि-
या त्वं पुरा नरेण विभो ।

साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ३५ ॥

परिमातुं तव मूर्ति नालम-
जस्तत्परात्परोऽसि विभो ।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ३६ ॥

फलमिह नृतया जनुषस्त्वत्पद-
सेवा सनातनेश विभो
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ३७ ॥

बलमारोग्यं चायुस्त्वद्गुण-
रुचितां चिरं प्रदेहि विभो ।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ३८ ॥

भगवन्भर्ग भयापह भूतप-
ते भूतिभूषिताङ्ग विभो ।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ३९ ॥

महिमा तव न हि माति श्रुतिषु
हिमानीधरात्मजाधव भो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ४० ॥

यमनियमादिभिरङ्गैर्यमिनो
हृदये भजन्ति स त्वं भो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ४१ ॥

रज्जावहिरिव शुक्तौ रजतमि-
व त्वयि जगन्ति भान्ति विभो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ४२ ॥

लब्ध्वा भवत्प्रसादाच्चक्रं
विधुरवति लोकमखिलं भो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ४३ ॥

वसुधातद्धरतच्छयरथमौ-
र्वीशर पराकृतासुर भो ।

साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ४४ ॥

शर्व देव सर्वोत्तम सर्वद
दुर्वृत्तगर्वहरण विभो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ४५ ॥

षड्रिपुषड्मिषड्विकारहर
सन्मुख षण्मुखजनक विभो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ४६ ॥

सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्मे-
त्येतल्लक्षणलक्षित भो।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ४७ ॥

हाहाहूहमुखसुरगायक-
गीतापदानपद्य विभो ।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ४८ ॥

ळादिर्न हि प्रयोगस्तदन्त-
मिह मङ्गळं सदास्तु विभो ।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ४९ ॥

क्षणमिव दिवसान्नेष्यति त्वत्पद-
सेवाक्षणोत्सुकः शिव भो ।
साम्ब सदाशिव शंभो शंकर
शरणं मे तव चरणयुगम् ॥ ५० ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
श्रीमच्छंकरभगवतः कृतौ
सुवर्णमालास्तुतिः संपूर्णा ॥